International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(1): 64-66

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(1): 64-66
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-11-2016
Accepted: 15-12-2016

डॉ0 रविन्द्र कुमार
पीएच.डी., चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, भारत।

Correspondence
डॉ0 रविन्द्र कुमार
पीएच.डी., चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, भारत।

ऋग्वेद में उपमा परक बिम्ब की विवेचना

डॉ0 रविन्द्र कुमार

ऋग्वेद में काव्यशास्त्र के लगभग समस्त काव्य लक्षणों का हम दिग्दर्शन कर सकते हैं। इसी संदर्भ में ऋग्वेद में उपमा की सुन्दर योजना को हम बिम्ब के संदर्भ में दृष्टिपात कर सकते हैं।

ऋग्वेद के प्रस्तुत मन्त्र में वेद विद्या के लिए फलदार वृक्षों का बिम्ब आया है। अर्थात् जैसे विविध प्रकार के फल-फूलों से युक्त वृक्ष फलादि देकर सुख पहुंचाते हैं, वैसे ही वेदवाणी बहुत प्रकार से सुख पहुंचाती है यहां उपमान रूप में फलदार वृक्षों का बिम्ब प्रयुक्त हुआ है[1]।

प्रस्तुत मन्त्र में इन्द्र एवं वृत्र के लिए क्रमशः विद्युत एवं वृक्ष का बिम्ब प्राप्त होता है। अर्थात् जिस प्रकार बिजली वृक्ष को मार देती है उसी प्रकार इन्द्र ने वृत्र को मारा[2]।-

उपमा अलंकार के साथ-साथ बिम्ब की सृष्टि ऋग्वेद में सतत प्राप्त होती है। जिस प्रकार गाय के थनों में दूध भरा रहता है, उसी प्रकार इन्द्र को सोमरस से भरपूर करो। यहां एक ओर जहां उपमा अलंकार की अभिव्यक्ति है वहीं दूसरी ओर इन्द्र एवं सोम के लिए क्रमशः गाय एवं दूध का बिम्ब दिया गया है[3]।-

अविवाहिता लड़की तथा पति के लिए क्रमशः धनार्थी एवं धन का बिम्ब प्रस्तुत है। जिस प्रकार पिता के घर में बैठी अविवाहिता लड़की पति की इच्छा करती है वैसे धनार्थी स्तोता धन की। यहां उपमा अलंकार के द्वारा जो उपमान दिया गया है, उससे बिम्ब भी अनायास सृष्ट हो गया है[4]।-

ब्रह्मस्पति जिसे अपना मित्र बना लेता है वह समुद्र के समान उत्साही और मस्त बैल की तरह बलवान् हो जाता है। यहां उपमाओं के द्वारा तीन बिम्ब प्राप्त होते हैं अर्थात् व्यक्ति के लिए समुद्र एवं बैल तथा ज्वालाओं का बिम्ब क्रमशः उत्साह एवं बल के सन्दर्भ में हुआ है अतः यहां एक ही स्थान पर उपमा के साथ व्यञ्जना की भी सृष्टि हुई है[5]।-

सज्जन व्यक्ति एवं बन्धनों के लिए क्रमशः घुड़सवार एवं कठिन मार्गों का बिम्ब दिया गया है। जैसे एक घुड़सवार कठिन मार्गों को पार कर जाता है, उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति बन्धनों को पारकर जाता है। उपमा के द्वारा बिम्ब की अभिव्यक्ति सुग्राह्य है[6]।-

जिस प्रकार को कोई व्यभिचारिणी स्त्री किसी एकान्त और दूर स्थल में अपने गर्भ को प्रसूत करके चली जाती है, उसी प्रकार पाप हमसे दूर और एकान्त स्थान मे चले जायें। यहां उपमान के रूप में प्रसूत का बिम्ब पापों के लिए प्राप्त है[7]।-

इन्द्र के वर्णन के सन्दर्भ मे उपमा का अनायास ही समावेश हो गया है। यहां उपमा का जितना सुन्दर प्रयोग प्राप्त होता है, उतनी ही सुन्दर बिम्ब की सृष्टि है। इन्द्र दिखने में उग्र भयंकर वीर सा दिखता है। यहां इन्द्र के लिए वीर का बिम्ब दिया गया है। यहां इस बिम्ब के एवं उपमा के माध्यम से इन्द्र के जिस गुण की-अभिव्यक्ति अभिप्रेत थी वह बड़ी ही सरलता एवं सुगमता से पाठक के सम्मुख अभिव्यक्त हो गई है[8]।

उषा के लिए ऋग्वेद में कन्या एवं चक्र का बिम्ब उपमा के द्वारा प्रकटीभूत् हुआ है। यहां उषा को कन्या के समान सुन्दर एवं चक्र के समान हमेशा घूमने वाली कहा गया है। यहां उपमा का जितना सुन्दर प्रयोग है, उतना ही सुन्दर बिम्ब की सृष्टि भी हुई है[9]।-

सूर्य के लिए सुन्दर व तरुणी का बिम्ब उपमान के द्वारा सृष्ट हुआ है। जिस प्रकार कोई सुन्दरी तरुणी अपने सुन्दर रूप को धारण करती है, उसी तरह यह सूर्य उत्तम शोभा को धारण करता है[10]।-

मित्रता कैसी हो? इस विषय को प्रस्तुत मन्त्र मे पूषा देव की स्तुति के सन्दर्भ में उद्घाटित किया गया है। छिद्र रहित दही से परीपूर्ण पात्र जैसा आनन्द देता है, वै वैसे मित्रता कुटिलता से रहित हो। यहां मित्रता के लिए दही के पात्र की उपमा दी गई है अर्थात् मित्रता में कोई धोखा न हो, छल-कपट न हो वह मधुर दही के समान आनन्द देने वाली। यहां अच्छी मित्रता के लिए छिद्र रहित दही के पात्र का बिम्ब दिया गया है[11]।

संसार में सज्जन लोग अल्प ही होते हैं, उनके लिए छोटे-छोटे डण्डों का बिम्ब दिया गया है। जिस तरह गायों को हांकने के लिए डण्डे छोटे-छोटे होते हैं, उसी प्रकार भरण भोषण करने वाले सज्जन भी अल्प ही होते हैं, यहां उपमा अलंकार के द्वारा बिम्ब की सुन्दर सृष्टि हुई है[12]।

जब इन्द्र शत्रु की पराजय करने के लिए जाता है, तब स्तोता उसकी स्तुति करते हैं, उन स्तुतियों से इन्द्र का बल पेड़ों की शाखाओं की तरह बढ़ता है। यहाँ इन्द्र के बल की वृद्धि के लिए पेड़ की शाखाओं का बिम्ब प्राप्त हुआ है उपमा का प्रयोग इस बिम्ब को और सुग्राह्य तथा सरल बना रहा है[13]।

जिस तरह कोई ग्वाला अपनी गायों पर पूर्ण प्रेम करता है, उसी तरह जो इन्द्र पर पूर्ण प्रेम करता है, उसकी सब इच्छाएं पूर्ण होती हैं, यहां उपमा के द्वारा जो बिम्ब आया है बहुत सुन्दर है स्तुतिकर्ता के लिए ग्वाले तथा इन्द्र के लिए गाय का बिम्ब सृष्ट हुआ है[14]।

हे इन्द्र। जैसे बाज को उसके पंख ले जाते हैं, उसी प्रकार घोड़े तुम्हें ले आवें। यहाँ उपमा का बड़ा सुन्दर प्रयोग है तथा इन्द्र के लिए बाज एवं घोड़ों के लिए पंखों का बिम्ब सृष्ट हुआ है[15]।

अश्विदेव सोम रस के प्रति भैंसों के समान व्यासे होकर तथा जलों के समीप पंछी के तुल्य चले जाते हो। यहां अश्विदेवों के लिए भैंसों एवं पंछी का बिम्ब आया है[16]।

प्रस्तु मन्त्र में अश्विदेवों के लिए हंसों, एवं पक्षियों का बिम्ब प्राप्त होता है तुम दोनों हंसों के समान तेजस्वी हो, जिस तरह पक्षी सूर्योदय होते ही दाने के लिए घर घर जाते हैं, उसी तरह ये देव जाते हैं। यहां उपमा अलंकार का सुन्दर उदाहरण है[17]।

जिस तरह सूद, उसका मूलधन और अन्य तरह का ऋण मनुष्य पूरी तरह उतार देते हैं, उसी प्रकार मनुष्य पापों को भी अपने पाप से दूर कर दे। यहां पापों के लिए ऋण का बिम्ब प्राप्त होता है[18]।

ज्ञानियों के लिए प्रस्तुत मन्त्र में पक्षी का बिम्ब प्रयुक्त हुआ है। हे ज्ञानियों। तुम उत्तम हो और गुणों से युक्त होकर पक्षियों के समान सर्वत्र धूम कर उत्तम उपदेश दो। दूसरा बिम्ब उपमान के द्वारा घोड़े का आया है[19]।

जिस तरह कोई परशुधारी मनुष्य पेड़ों को आसानी से काट डालता है, उसी तरह सूर्य अन्धकार का विनाश करता है। यहां पर प्रस्तुत मन्त्र में सूर्य के लिए परशुधारी मनुष्य का एवं अन्धकार के लिए वृक्षों का बिम्ब सृष्ट हुआ है[20]।

वह अमर सोमदेव पात्रों में जाकर बैठने के लिए पक्षी के समान दौड़ता रहता है। सोम के लिए यहां उपमान रूप मे पक्षी का बिम्ब प्रयुक्त हुआ है[21]।

ये सोम रस निकाले जाने के बाद शीघ्रता से छाननी से नीचे उतरते हुए रथों अथवा घोड़ों के समान शब्द अथवा आवाज करते हैं। यहां उपमान रूप में सोम के लिए रथ एवं घोड़े का बिम्ब आया है[22]।

इन्द्र को तथा दूसरे दिव्य जन को आनन्द देने के लिए सोम सिन्धु की लहरी के समान शुद्ध होकर जाता है। प्रस्तुत मन्त्र में सोम के लिए समुद्र की लहरों का बिम्ब उपमान रूप में सृष्ट हुआ है[23]।

सोम सर्प के समान जीर्ण त्वचा को दूर करता है। घोड़े के समान खेलता हुआ कलश में जाता है। यहां सोम के लिए उपमान रूप में सर्प का एवं घोड़े का बिम्ब प्रयुक्त हुआ है[24]।

<u>संदर्भ</u>

1. एवा हास्य सुनृता विरप्शी गोमती मही।
   पक्वा शाखा न दाशुषें।। ऋ 8।8।1
2. अध्वर्यवो यो अपो वव्रिवांसं वृत्रं जधानाशन्येव वृक्षम्।
   तस्मा एतं भरत तद्वशाय एष इन्द्रो अर्हति पीतिमस्य।। ऋ. 2।14।2
3. अध्वर्यव: पयसोधर्यथा गो: सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम्।
   वेदाहमस्य निभृतं म एतद् दित्सन्तं भूयो यजतं श्चकते।। ऋ. 10।14।2
4. अमाजूरिव पित्रो: सचा सती समानादा सदसस्त्वामिये भगम्।
   कृधि प्रकेतुमुप मास्या भर दद्वि भागं तन्वो येन मामह:।। ऋ. 7।17।2
5. सिन्धुर्नक्षोद: शिमीवाँ ऋघायतो वृषेव वध्रीरँभि वष्ट्योजसा।
   अग्नेरिव प्रसितिर्नाह वर्तवे यंयं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पति:।। ऋ. 3।25।2
6. यो वो माया अभिद्रुहे यजत्रा: पाशा आदित्या रिपवे विचृता:।
   अश्वीव तां अति येषं रथेना रिष्टा उरावा शर्मन्त्स्याम।। ऋ. 16।28।2
7. धृतव्रता आदित्या इषिरा आरे मत् कर्त रहसूरिवाग:।
   शृण्वतो वो वरुण मित्र देवा भद्रस्य विद्वाँ अव से हुवे व:।। ऋ. 1।29।2
8. उग्रस्तुराषाडाभिभूत्योजा यथावशं तन्वं चक्र एष:।
   त्वष्टारमिन्द्रो जनुषाभिभूयाऽऽमुष्या सोममपिबच्चमूषु।। ऋ. 4।48।3
9. उष: प्रतीची भुवनानि विश्वोर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतु:।
   समानमंर्थ चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व।। ऋ. 3।61।3
10. वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सायोर्वाद् गवां माता जानती गात्।
    धन्वर्णसो नद्य: खोदोअर्णा: स्थूणेव सुमिता दृंहत् द्यौ:।। ऋ. 2।45।5
11. वृतेरिव तेऽवृकमस्तु सख्यम्।
    अच्छिद्रस्य दधन्वत: सूपूर्णस्य दधन्वत:।4।48।6
12. दण्डा इवेद् गोअजनास आसन् परिच्छिन्ना भरता अर्भकास:।
    अभवच्च पुरएता वसिष्ठ आदित् वृत्सूनां विशो अप्रथन्त।6।33।7
13. स्तोता यत् ते विचर्षणि रतिप्रशर्धयद् गिर:।
    वया इवानु रोहते जुषन्त यत्।6।13।8
14. आ त्वा गोभिरिव व्रजं गीर्भिर्ऋणोम्यद्रिव:।
    आ स्मा कामं जरितुरा मन: पृण।6।24।8
15. आ त्वा मदच्युता हरी श्येनं पक्षेव वक्षत:।
    दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो।9।34।8

16. हरिद्रवेव पतथो वनेदुप सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः।
    सजोषसा उषससूर्येण च त्रिवर्तिर्यातमश्विना।6।35।8
17. हंसाविव पतयु अध्वगाविव सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः।
    सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तियतिमश्विना।4।37।4
18. यथा कलां यथा शफं यथा ऋणं संनयामसि।
    एवा दुष्ष्वप्न्यं सर्वमाप्त्ये सं नयामस्यनेहसो व ऊतयः सुउतयो व ऊतयः। 17।47।8
19. सुदेवाः रथ काण्वायना वयो वयो विचरन्तः।
    अश्वासो न चङ्क्रमत।4।77।8
20. अश्विना सु विचाकशद् वृक्षं परशुमां इव।
    अन्ति षद्भूतु वामवः।17।73।8
21. एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति।
    अभि द्रोणान्यासदम्।1।3।9
22. एते सोमास आशवो रथा इव प्र वाजिनः।
    सर्गाः सृष्टा अहेषत।1।22।9
23. तं त्वा हस्तिनो मधुमन्त मद्रिभिर्दुहन्त्यप्सु वृषभं दशक्षिप।
    नृभिः सोम प्रच्युतो ग्रावभिः सुतो विश्वात् देवां आ पवस्वा सहस्रजित्।4।80।9
24. विपश्चिते पवमानस्य गायत मही न धारात्यन्धो अर्षति।
    अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वच मत्यो न क्रीडन्नसरद्वृषा हरिः।। ऋ 44।86।9